

पुस्तक समीक्षा

कितने मोर्चे

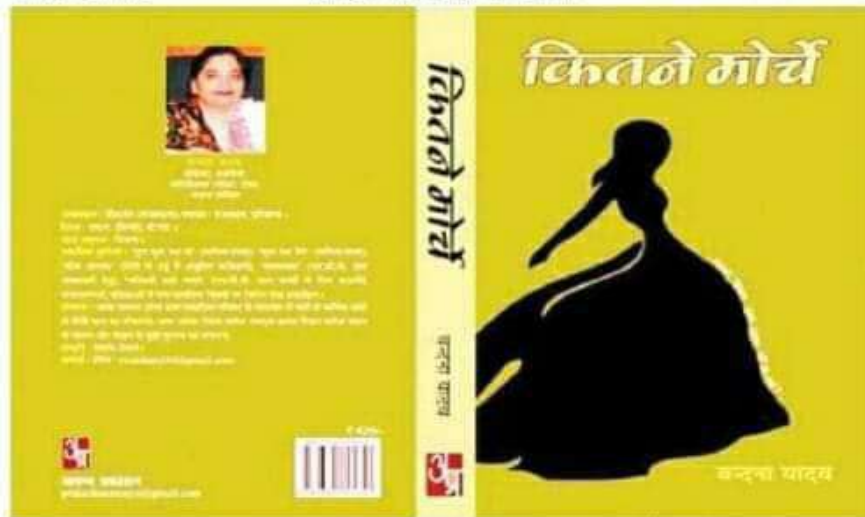
वंदना यादव का नया उपन्यास **कितने मोर्चे** एक अलहदा विषय को अनुगूँज करते हुए किस्सागोई के पूरे कलेवर के साथ उपस्थित हुआ है, जो अपने अनूठपन के बल पर न केवल पाठकों को अंत तक बांधे रखता है बल्कि अपने कथ्य, शिल्प और मुहावरों के साथ रोचकता को बरकरार रखता है।

चुनीतियों पर लड़ती हैं। सिविलियन पति - पत्नी मिलकर पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हैं, जबकि इस फंट पर एक फौजी को पत्नी अकेली कई चुनीतियों का सामना कराती है।

अकेली पत्नियों को अपने हक्स के जाल में फँसाने के लिए कई लोग कौटा खले बैठे रहते हैं, कई लोगों के



रमेश यादव



सरहदों पर देश की रक्षा का मोर्चा संभालने वाले जांबाज फौजीयों के प्रति समाज पूरे आदर-सम्मान से पेश आता है पर दूसरे मोर्चे की धुरा इन फौजीयों की पत्नियाँ संभालती हैं जिनकी दास्ताँ को यह उपन्यास पूरे शिद्दत से स्वर देता है। इन फौजीयों की पत्नियों पर - परिवार, बच्चों की परवरिश, बाजार - हाट, अक्सर घरों की शिफ्टिंग, स्कूल - कॉलेज प्रवेश, परीक्षा, रिश्तेदारी और नीकरी के साथ - साथ कई सामाजिक तथा सांस्कृतिक जिम्मेदारियों को अकेले निभाते हुए जिन्दगी के अशा - निराशा के समंदर में गोते लगाती हैं और अपने पास - पड़ोस के प्रति सरोकार की भावनाओं को भी बखूबी निभाती हैं। एक दूसरे के सुख - दुख को साझा करते हुए एकल जीवन जीने की मजबूरी के साथ एक अहम जिम्मेदारी का वहन कराती हैं। दूरियों की मजबूतियाँ फौजीयों के पैरों में बेड़ियाँ डाल रखी होती हैं।

समाज की अदालत में ये महिलाएँ अपनी दलील पेश करते हुए कई अनुत्तरित प्रश्नों के साथ इस उपन्यास के माध्यम से उपस्थित होती हैं, और अपने हक की गुहार लगाती हैं जो आम जनों को हिलाकर रख देती हैं।

शहीदों के बलिदान को देश वंदन करता है। भरणीपरांत समारोह में पत्नी को उपस्थिति में गुण गौरव के साथ उसे शीर्ष पदक प्रदान करता है, पर उस विधवा पत्नी और उसके बच्चों के बारे में हम कितना सोचते हैं, उन्हें कब तक याद रखते हैं? इनके कर्ज के बारे में ये देश समाज कितना मनन करता है? क्या इस बारे में हम कभी सोचते हैं?

असली मोर्चा तो फौजीयों की पत्नियाँ संभालती हैं जो एक साथ कई

तलाक हो जाते हैं और कई लोग बच जाते हैं। इस परिस्थिति के लिए जिम्मेदार कौन है?

यह उपन्यास हमें एक ऐसी दुनिया से रुबरू कराता है जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। देश दुनिया का अहम हिस्सा होने के बावजूद हमारा समाज इनकी दुनिया से काफी हद तक आज भी अनभिज्ञ है। शहादत देश के लिए सम्मान का विषय हो सकता है पर एक विधवा पत्नी और उसके बच्चों के लिए... बड़े मौँ बाप के लिए कभी उसका माहौल नहीं हो सकता, उन्हें वो जिन्दगी भर सिर्फ रोना और रोना ही होता है। संपर्क के साथ जीना उनकी नियति है। माना कि कई सुख सुविधाएँ व्यवस्था उन्हें उपलब्ध कराती हैं जो आम नागरिक के जीवन में सहज संभव नहीं हो पाता पर किस कीमत पर? क्या इसके बारे में हमने कभी गौर किया है? नहीं ना! इसीलिए ये उपन्यास खास है।

दूसरे मोर्चे की सही सलाहमती, रक्षा - सुरक्षा, सकुशलता का संदेश हो बीहड़, उबड़ खाबड़ और बर्फीले प्रदेशों में देश की रक्षा का भार संभाल रहे तथा दुश्मनों की गोर्लियों के निशाने पर खड़े जवानों का सम्बल होता है।

फौजीयों के रिहायशी इलाक़े की जीवन पद्धति, प्रशासन - व्यवस्था, संपर्क, प्रेम, करुणा, माया, ममता, बिखरती जिंदगियाँ, बनते - बिगड़ते सपने जैसे तमाम भाव भावनाओं को वास्तविकता का स्वर देते हुए यह उपन्यास अपनी अलग छाप छोड़ता है। फ़फ़ की कमियाँ को छोड़ दें तो यह उपन्यास फौजीयों की पत्नियों के अंतरहृदय के कई छटाओं से परिचय कराता है और फौजी व्यवस्था के स्याह एवं श्वेत पक्ष को भी उजागर

करता है।

इसमें केंद्रबिंदु के रूप में मौजूद तेज तर्रार कुसुम एक फौजी की आदर्श पत्नी, अच्छी माँ, सखी, कुशल गृहिणी, सरोकारी और जागृत महिला के रूप में महिलाओं के लिए रोल मॉडल के तौर पर अपनी छाप छोड़ती है। कई मोर्चों पर अपने हक और अधिकार के लिए लड़ना सिखाती है, फिर चाहे वह फौजी जिन्दगी हो या सिविलियन जिन्दगी....

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि यह उपन्यास पठनीय और संग्रहीय है। साहित्य जगत में इसका स्वागत किया जाएगा इसमें कोई दो राय नहीं है।

ऐसी अनूठी कृति और अनूठे विषय के लिए वंदना जी की ढेर सारी बधाइयाँ और शुभकामनाएँ।

नजरे चुराता आईना

नीरज त्यागी

कुछ जीवन के लम्हे लिखे, कुछ जीवन के लम्हे खो गए।

चंद बाते पत्रों पर लिखी, चंद मन के कोनों में खो गयी।

वो जो लम्हे कहीं खो गए हैं, वस वही तो जीवन था।

बेशक उन लम्हों में धोखा था, पर धोखा उजागर तो ना था।।

वो बीते लम्हों में जो गलतियाँ की, वो मेरी अपनी तो थी।

आईने के सामने जो सर दुका वो कहीं सही तो था।।

अब आदत है चु हों बिन गलतियों के गलतियाँ मानने की।

बिन गलतियों के अब आईने के सामने जाने का अपना मजा है,

अब आईना है जो मुझसे नजरे चुराता है उसका अपना मजा है।।